॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



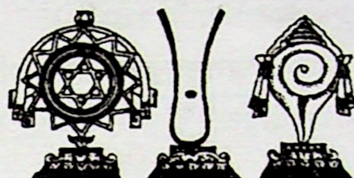
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीराधा–राधना

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीराधा-राधना

रचयिता-

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

द्वितीय भाद्रशुक्ल ८ श्रीराधाष्टमी महोत्सव

वि० सं० २०६९, दिनांक २३/९/२०१२ ई०

वि० सं० २०७१ श्रीनिम्बार्काब्द ५१११

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

प्रथमावृत्ति : वि. सं. २०५६

द्वितीयावृत्ति-१००० वि. सं. २०७१

मुद्रक--

श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर

पन्द्रह रुपये

।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

समर्पणम्

श्रीकृष्णाह्लादिनीं राधां वृन्दाविपिनकुञ्जगाम्।
कृपाकादम्बिनीं दिव्यां वन्दे कुञ्जाऽऽलिसेविताम्।।१।।
हे निकुञ्जेश्वरि ! श्यामे ! राधे सर्वेश्वरप्रिये ।
रसिकाऽग्र्यैः समाराध्ये ! प्रसीद करुणाधिपे ! ।।२।।
त्वदनुग्रहमात्रेण श्रीराधाराधनाऽभिधः।
अर्प्यते स्फुरितो ग्रन्थः कोटिप्रणतिपूर्वकम्।।३।।
यमुनाकूलगे ! राधे ! गृहाण सदयं मुदा।
यादृशः प्रस्तुतो ग्रन्थो लघुरूपो रसप्रदः।।४।।

रङ्गदोलमहोत्सवः
फाल्गुनशुक्ल-पूर्णिमा-सोमवासरः
वि० सं० २०५६
दिनांकाः २०-३-२०००

श्रीराधापदाब्जरसभक्तिकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

विश्वविख्यात श्रीरामकथा प्रवक्ता, निम्बार्करत्न,
युगसन्त श्रीमुरारी बापू हरिव्यासी
मउवा-भावनगर (सौराष्ट्र) द्वारा-

✼ मङ्गल--कामना ✼

पूज्यपाद जगदुरु श्री ''श्रीजी'' महाराज रचित ''श्रीराधा-राधना'' पुस्तिका का दर्शन हुआ !

पूज्य चरणों का वचन कथन और जीवन तीनों का जो संगम हम देखते हैं, तब कौन प्रसन्न नहीं होता !

पूज्यचरणों में वन्दन और श्रद्धा के साथ

रामकथा उदयपुर
दिनांक २४-१-२०००

--मुरारी बापू

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

सन्निवेदनम्

अनयाऽराधितोनूनं'' श्रीराधिकामूल-सूत्रमवलम्ब्य राधिकोपासना समग्रे ब्रह्माण्डे संप्रचलति, एषा साधना समुपासना भक्तानां मनसि श्रद्धां भक्तिं निष्ठां प्रारभ्य चरणयुग्मे समर्पणं प्रापयति।

व्रजेश्वरीं प्रमाण-शासनेश्वरीं व्रजमधिकृत्य पूज्याचार्यचरणैः ''श्रीराधा-राधना'' रचिता भावसुमनैः सुरभिकृता ज्ञान-भक्ति-धर्मस्य संप्रकाशिका आलोकिता च प्रकाशनस्यास्य सादरमभिनन्दनं वन्दनं निवेदयामि।

सादरम्-

महन्त-मुरलीमनोहरशरणः शास्त्री

मेवाड़महामण्डलेश्वरः, स्थलाश्रमः

उदयपुरम् (राजस्थानम्)

अध्यक्षः-

अ० भा० श्रीनिम्बार्क-महासभा

पुरोवाक्

इस बात पर हम राजस्थानवासी सदा गौरव का अनुभव करते रहे हैं कि राजस्थान की धरती पर वैष्णव सम्प्रदायों के दो प्रमुख आचार्यपीठ अवस्थित हैं। सलेमाबाद में निम्बार्कपीठ और नाथद्वारा में वल्लभपीठ। यह और भी अधिक गौरवास्पद है कि निम्बार्कपीठाधीश श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी स्वयं संस्कृत के अधिकारी विद्वान्, सरस कवि, मधुर वक्ता और परिनिष्ठित लेखक हैं। उनकी अनेक काव्यकृतियाँ संस्कृत-हिन्दी और व्रजभाषा में प्रकाशित हो चुकी हैं और विद्वज्जनों तथा भक्त समुदाय में समादृत रही हैं।

मुझे यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि श्री ''श्रीजी'' महाराज की लेखनी अब भी निरन्तर सक्रिय और सर्जनरत है। इस लेखनी से प्रसूत नवीनतम सरस काव्यकृति ''श्रीराधाराधना'' संस्कृत, हिन्दी और व्रजभाषा का त्रिवेणी संगम है तथा इसमें परमानन्दस्वरूप श्रीकृष्ण की आह्लादिनीशक्ति श्रीराधा के समस्त आयामों की वन्दना निबद्ध है। संस्कृत के ५१ अनुष्टुप् छन्दोबद्ध पद्यों में, हिन्दी के ५१ दोहों में तथा व्रजभाषा की २५ गीतियों में निकुञ्जलीलेश्वरी, सर्वेश्वर प्रभु की हृदयाह्लादिनी वृषभानुनन्दिनी की प्रशस्ति, ध्यान, महिमोल्लेख, वन्दना तथा गुणगणानुवर्णन है।

संस्कृत पद्यों की शैली पारम्परिक स्तोत्रों की है तो दोहों

की पारम्परिक काव्यों की। दोहों में श्री ''श्रीजी'' महाराज ने अपना काव्य संकेताभिधान ''शरण'' चतुर्थ चरण में उल्लिखित भी किया है। यह कवियों की पारम्परिक शैली रही है। इस नाम संकेत को काव्य परम्परा में ''भनत'' कहा जाता है। गीतियों में सरसता और गेयता पूर्णतः प्रतिफलित है। यह निर्विवाद है कि तीनों भाषाओं की काव्य धाराओं का यह त्रिवेणी संगम ''श्रीराधाराधना'' उसी प्रकार विद्वज्जगत् में तथा काव्यरसिकवृन्द में प्रभूत स्वागत और आदर पायेगा। जिस प्रकार श्री ''श्रीजी'' महाराज की अन्य काव्यकृतियाँ पाती रही हैं।

इस नूतन काव्य प्रसाद के अवदान द्वारा श्री ''श्रीजी'' महाराज ने भक्तजनों को जो नई पीयूषधारा प्रदान की है उसके लिए वे उनके चिरऋणी रहेंगे, इसमें सन्देह नहीं।

--देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(राष्ट्रपति सम्मानित संस्कृत विद्वान्)
भूतपूर्व अध्यक्ष राजस्थान संस्कृत अकादमी
तथा निदेशक-संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार
जयपुर

परमा शक्ति श्रीराधा

अथर्ववेद की पिप्पलाद शाखा के अन्तर्गत 'राधिकोपनिषद्' में परमाशक्ति श्रीराधा के अलौकिक एवं सर्वोत्कृष्ट महत्व का प्रतिपादन किया हुआ है। एक समय ब्रह्मज्ञानी महर्षियों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि विविध कर्म फलों के दाता असंख्य देवी-देवताओं के रहते परमभागवत रसिकमहानुभाव सर्वात्मभाव से श्रीराधिका की ही आराधना क्यों करते हैं? इस प्रकार उन महात्माओं के मन में परस्पर जिज्ञासा होने पर वहाँ एक प्रकाश पुञ्ज प्रकट हुआ। वह प्रकाश पुञ्ज वेदमन्त्रों का समूह था। ये श्रुतियाँ ऋषि-मुनियों की शंकाओं का निवारण करती हुई श्रीराधिका के अनन्त दिव्य गुणों की व्याख्या करने लगी। इसी अभिप्राय से उपनिषद् के आरम्भ में कहा-''ब्रह्मवादिनो वदन्ति कस्माद् राधिकामुपासते, आदित्यो ह अभ्यद्रवत्।'' यहाँपर ब्रह्म शब्द, शब्दब्रह्म और परब्रह्म दोनों का वाचक हैं। अतः शास्त्रज्ञानपूर्वक परब्रह्म की उपासना करने से ही परमश्रेयः की सिद्धि होती है ऐसा आचार्यों का सिद्धान्त है।

पूर्वाचार्यों की इसी सरणि का अनुसरण करते हुए वर्तमान जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' महाराज ने सुललित शब्दावलियों से ''श्रीराधाऽराधना'' नामक ग्रन्थ की रचना कर जिज्ञासु साधकजनों के लिए सुगम मार्ग प्रशस्त किया है। भगवान् श्रीकृष्ण की अनन्त शक्तियों में प्रेमाधिष्ठात्री परमाह्लादिनी शक्ति

श्रीराधा सर्वोपरि हैं। क्योंकि जिन परमाह्लादिनी शक्ति नित्य-निकुञ्जेश्वरी श्रीराधा के दिव्य मंगलमय, कोटि रवि प्रतीकाश, गौरतेजोमय वपुः का सान्निध्य पाकर सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का दिव्य श्यामविग्रह भी गौर वर्ण का हो जाता है तथा निकुञ्ज के नित्य परिकर भ्रमर-कोकिल आदि भी गौरवर्ण के बन जाते हैं। ऐसी शरणागतजनों का कल्मष दूर कर अमन्द आनन्द प्रदान करने वाली परम कृपामयी श्रीराधा की हम सभी श्रुतियाँ सदा वन्दना करती हैं, यह श्रुतियों का कथन है। ऐसे-ऐसे अनेक भाव उस उपनिषद् में अभिवर्णित हैं। ''यस्या भासा कृष्णदेहोऽपि गौरो जायते देवस्येन्द्रनीलप्रभस्य। भृङ्गाः काकाः कोकिलाश्चापि गौरास्तां राधिकां विश्वधात्रीं नमामः।'' उनकी महिमा को वेद, वेदान्त, स्मृति, पुराण आदि शास्त्र भी सर्वाङ्ग रूप में परिवर्णन नहीं कर पाते। अतः श्रीहरि के अनुरूप सौभाग्यमयी होने से अनन्त रूपा हैं। जो वेदों में श्री, स्मृतियों में परमाशक्ति, पुराणों में रसिकसर्वस्व परमोत्कृष्टा, कवियों की वाणी में सुविख्यात परमाह्लादिनीशक्ति उन नित्यकिशोरी श्रीकृष्णवल्लभा श्रीराधा की सदा जय हो। ''श्रुतौ या श्रीरुक्ता स्मृतिषु परमाशक्तिरथ च, पुराणेषूत्कृष्टा रसिकजनहृत्पद्म-निलया। कवीनां वाणीषु प्रथितविभवाऽह्लादसुभगा किशोरी सा राधा जयतु जगदीशैकदयिता।''

श्रीराधा वृन्दावनाधीश्वरी हैं रसनिधि रासविहारी श्रीहरि के साथ नित्यनिकुञ्जवासिनी हैं। श्यामसुन्दर के मन को भी मोहने वाली है। जिनकी समाराधना अनन्त सहचरीवृन्द सदा करती हैं उन्हीं सहज कृपामयी श्रीराधा की स्तुति वन्दनापूर्वक सरल रूप में

समाराधना का लाभ समस्त भावुक रसिकजनों को सुलभ हो एतदर्थ पूज्य आचार्यश्री ने अनुग्रह करके ''श्रीराधाऽराधना'' ग्रन्थ के रूप में सरल साधन प्रदान किया है जिसका पठन-मनन-चिन्तन कर हम अपने जीवन को सफल बनावें।

मिति फाल्गुन शु. ६ मंगलवार
वि. सं. २०५६ दि. १४-३-२०००

श्रीचरणरजरेणुः--
वासुदेवशरण उपाध्याय 'निम्बार्कभूषण'
व्या० सा० वेदान्ताचार्य
प्राचार्य-
श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद (राज.)

।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

''श्रीराधाराधना'' ग्रन्थविषयक--

स्वीय-हार्दिकोद्भावः

इह खलु भारतवर्षधराधाम्नि सर्वनियामकसर्वेश्वरवृन्दावन-नवनिकुञ्जरसेश्वरीश्रीराधाकृष्णभगवतस्तत्राऽपि च श्रीकृष्णाह्लादिन्याः परमशक्त्याः श्रीराधाया दिव्याराधनैव नृजीवनस्य सर्वप्रमुखं मूलोद्देश्यम्। निखिलजगन्नियन्तुः सर्वात्मनः सर्वद्रष्टुः श्रीराधासर्वेश्वर-स्याऽनुपमाऽनुकम्पया परञ्च बहुजन्मार्जितपुण्यपुञ्जबाहुल्येनैव नृदेहरूपेण जन्मधारणावसरः समुपैतीति परमद्रढीयान्प्रत्ययः। यावन्निखिलशास्त्रवचनैस्तथा च योगीन्द्र-मुनीन्द्र-महर्षि-महात्मनां सताञ्च दिव्योपदेशैश्चाऽपीदमेव निश्चप्रचं निर्धारितमस्तीति निखिलं सुविदितमेव। अतो नृदेहमुपलभ्य समस्तजगज्जन्मादिहेतुस्वरूप-श्रीराधासर्वेश्वरचरणाम्भोजस्याविरलस्मरणमेव प्रमुखं मनुज-जीवनोद्देश्यं स्यादित्येव निगमागमादिशास्त्राणां राद्धान्तः सुप्रसिद्धः। तत्राऽपि च निखिलजगदुत्पत्ति-स्थिति-लयवीजरूपसर्वेश्वर-श्रीकृष्णपरमात्मनः परमाह्लादिन्याः शक्त्याः प्रेमलक्षणात्मकसर्वो-त्कृष्टवृन्दावन-निकुञ्जरसभक्तिप्रदायिन्या नित्यनिकुञ्जेश्वर्याः सर्वेश्वर्या वृषभानुजायाः श्रीराधाया एव प्राधान्यम्। एवमेव परमाशयद्योतक-दिव्योपदेशः सुदर्शनचक्रावतारश्रीभगवन्निम्बार्काचार्यप्रणीत ''वेदान्त-कामधेनुदशश्लोकी'' निर्दिष्टसुप्रख्यातवचनमेवावधेयं प्रेक्षावद्भी

रसिकभगवज्जनैः यथा हि--

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोषमशेषकल्याणगुणैकराशिम्।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम्।।
अङ्गे तु वामे वृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूपसौभगाम्।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा स्मरेम देवीं सकलेष्टकामदाम्।।

'कामधेनोः' तुरीयश्लोकेन श्रीनिम्बार्कभगवता सर्वनियन्तुः सर्वज्ञस्य रसपरब्रह्मणः सर्वेश्वरस्य श्रीकृष्णस्य दिव्यस्वरूपं प्रतिपादितम्। ततः परं पञ्चमश्लोकेन श्रीकृष्णभगवतः परमाह्लादिन्याः शक्त्या नित्यनिकुञ्जेश्वर्या वृषभाज्ञनुजायाः श्रीराधायाश्च परमदिव्यतमस्वरूपं निरतिशय-सौन्दर्य-माधुर्य-सौकुमार्य-सौशील्य-कारुण्य-लावण्य-मार्दवाद्यखिलगुणगणार्णवत्वं निष्पादितम्। अत्र स्वसम्प्रदायसिद्धान्तसरण्या श्रीमन्निम्बार्कभगवता यत्परिवर्णितं तद्यथा- ''आत्मैवेदमग्रआसीत्, पुरुषविधः स, इदमेवात्मानं द्वैधाऽपातयत पतिश्चपत्नी चाभवताम्'' येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिर्देहश्चैकः क्रीडनार्थं द्विधाऽभूत्। देहो यथा छायया शोभमानः शृण्वन् पठन् याति तद्धाम शुद्धम्।'' ''राधया सहितो देवो माधवेन च राधिका योऽनयोर्भेदं पश्यति स संसृतेर्मुक्तो न भवति।।'' ''यः कृष्णः सोऽपि राधा च या राधा कृष्ण एव सा। अनयोरन्तरादर्शी संसारान्न विमुच्यते।।'' ''तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम्'' ''ब्रह्मवैवर्तपुराणे'' उमा-महेश्वर-संवादे श्रीवेदव्यासवचनेनाऽपि स्पष्टम्। तद्यथा-''राधा भजति तं कृष्णं स च तां च परस्परम्। उभयोः सवसाम्यञ्च सदा सन्तो वदन्ति हि।।'' अथाऽत्र ''औदुम्बर-संहितायां'' स्वकीयशिष्यं-श्रीमदौदुम्बराचार्यवर्यं प्रति सुदर्शनचक्रा-

वतारेणाऽऽद्याचार्यप्रवरेण श्रीमन्निम्बार्कभगवता समुपदिष्टम्-
''कल्लोलके वस्तुत एकरूपकौ राधामुकुन्दौ समभावभावितौ।।''
''राधया माधवो देवो माधवेन च राधिका विभ्राजते जनेषु। योऽनयोः पश्यते भेदं न मुक्तः स्यात्स संसृतेः।।'' इत्यादिनानाविध-श्रुतिपुराणादिवचनकदम्बैस्तथा-श्रीभगवन्निम्बार्कवचसाऽपि सुसिद्धम्। एवं हि श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वरश्रीहरिव्यासदेवाचार्यप्रणीत ''श्रीमहावाणी'' ग्रन्थोक्तमञ्जुवाक्यैश्चाऽप्यवधूयं विपश्चिद्वर्य्यैः-यथा च ''राधां कृष्णस्वरूपां वै कृष्णं राध.स्वरूपिणम्'' ''एक स्वरूप सदा द्वैनाम'' ''कृष्णरूप श्रीराधिका राधेरूप श्रीश्याम। दरसन कों ये दोय हैं, हैं एक हि सुखधाम।।''

एक रङ्ग में रङ्गे दोउ, एक प्राण द्वै गात।
वदन विलोकत परस्पर, छिन विछुरैं न सुहात।।

इत्थंविधवचनवृन्दैश्च श्रीराधामाधवस्वरूपैकत्वं विज्ञापितम्। श्रीयुगलकेलिरसविलासहेतोरेव श्रीकृष्णरूपत्वेन-श्रीराधा-रूपत्वेन च श्रीवृन्दावननवनित्यनिकुञ्जधाम्नि सातत्येन नितरां सुशोभते निखिलरसामृतसारसिन्धुघनविग्रहः सर्वनियन्ता सर्वान्तरात्मा सर्वद्रष्टा परात्परो रसपरब्रह्मभगवन्निकुञ्जेश्वरः श्रीराधाकृष्णः। अत्राऽपि रसेश्वरश्रीकृष्णपरमाह्लादिन्याः शक्त्याः श्रीराधाया यद्दिव्यतमवैशिष्ट्यं वरीवर्ति तत्प्रसङ्गे 'पद्मपुराण' वचनमवधेयम्,--

'देवी कृष्णमयी प्रोक्ता राधिका परदेवता।
सर्वलक्ष्मी स्वरूपा सा कृष्णाह्लादस्वरूपिणी।।
आनन्दरूपिणी शक्तिस्त्वमीश्वरी न संशयः।
त्वया च क्रीडते कृष्णो नूनं वृन्दावने वने।।'

अत्र श्रुतयोऽप्येवं सोल्लासं प्रतिपादयन्ति--

'राधा हि हरेः सर्वेश्वरी सर्वविद्या कृष्णप्राणाधिदेवी चेति विविक्तेवेदास्तुवन्ति यस्या गतिं ब्रह्मभागा वदन्ति'

'राधा रासेश्वरी रम्या कृष्णमंत्राधिदेवता।
सर्वाद्या सर्ववन्द्या च वृन्दावनविहारिणी।।'

प्रस्तुतप्रकरणे श्रीसुदर्शनायुधावतारेण भगवता श्रीमन्निम्बार्काचार्यवर्येण स्वप्रणीत 'श्रीराधाष्टक' स्तोत्रे 'प्रातःस्तवे' च यदभिवर्णितं तच्च सर्वैः परमभागवतरसिकभावुकजनैः सम्यग्विलोकनीयमेव तद्यथा--

**दुराराध्यमाराध्य कृष्णं वशे तं महाप्रेमपूरेण राधाऽभिधाऽभूः।
स्वयं नाम कीर्त्या हरौ प्रेम यच्छ प्रपन्नाय मे कृष्णरूपे समक्षम्।।
मुकुन्दस्त्वया प्रेमदोरेण बद्धः पतङ्गो यथा त्वामनुभ्राम्यमाणः।
उपक्रीडयन् हार्द्दमेवानुगच्छन् कृपा वर्तते कारयातो मयीष्टिम्।।
सदा राधिका-नामजिह्वाग्रतःस्यात् सदा राधिकारूपमक्ष्यग्र आस्ताम्।
श्रुतौ राधिकाकीर्त्तिरन्तः स्वभावे गुणा राधिकायाः श्रिया एतदीहे।।**

(श्रीराधाष्टकस्तोत्रम्)

**प्रातर्नमामि वृषभानुसुतापदाब्जं नेत्रालिभिः परिणुतं व्रजसुन्दरीणाम्।
प्रेमातुरेण हरिणा सुविशारदेन श्रीमद्व्रजेशतनयेन सदाऽभिवन्द्यम्।।**

(प्रातःस्तवराज)

इत्थं श्रुति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादिशास्त्रवचनैस्तथा श्री-भगवन्निम्बार्कविरचितस्तवैश्चाऽपि श्रीराधाया दिव्यमाहात्म्यपूर्वकस्वरूपमभिव्यञ्जितम्। अथाग्रे श्रीश्रीभट्टदेवाचार्य-श्रीमद्धरिव्यासदेवाचार्य-श्रीपरशुरामदेवाचार्य-श्रीवृन्दावनदेवाचार्य-श्रीगोविन्दशरण-

देवाचार्यप्रभृतिपूर्वाचार्यविरचितव्रजभाषानिबद्धरसवाणीग्रन्थैश्चाऽपि सुधीजनैर्विज्ञेयं तद्यथा--

जै जै श्रीवृषभानु किशोरी।
राजत रसिक अंक अङ्कित सी, लसी स्याम संग गोरी।।
जै जै राधे रूप अगाधे, चितै चारु चित चोरी।
'श्रीभट' नटवर रूप सुंदर वर, मोहे तैं थोरी बै भोरी।।
(श्रीयुगलशतक)

जै जै प्रिया प्रान-पिय प्यारी।
जै जै रूप उजारी राधे, अति सुन्दर सुकुँवारी।।
जै जै नीरजनैंनी नागरि, कलबैंनी कमलारी।
जै जै श्रीहरिप्रिया हिये नित, बसौ सदा सुखकारी।।
(श्रीमहावाणी)

राधिका जु सिंगार ठये, रचि कैं सिर सोभित चीर-
बन्यो, लहंगा नारी कुंजर पहरन, प्रीति नई।।
जाकै पाय बनैं घुघरा, बिछिया नेवरी टोडर,
चलतैं घन की छवि लागि रही।।
जु चली गज रीति, गहै रस प्रीति, मिली
हरि जाय, गये दुखदाय निहाल भई।।
परसराम कहै, मोहे स्याम धनी,
राधिका सम सुन्दरि आई न मही।।
(श्रीपरशुरामसागर-चरितावलियाँ)

'रसो वै स' श्रुति जो कह्यो, सोई सच्चिदानन्द।
कहियत वेद-पुरान में, परं ब्रह्म गोविन्द।।

ब्रह्म-प्रभा जाकी कह्यो, ज्यों रवि किरनि लसन्त।
श्रीराधा आह्लादिनी, शक्ति वहै इहि कन्त।।

वसी तुव मूरति नैंननि मेरे।
कैसे चैन परैं प्यारी अब, भली भाँति बिनु हेरैं।।
तनक किरकरी खरकति सोतो, नखसिख भूषन तेरैं।
'वृन्दावन प्रभु' नेह अजन ते, खरकति और घनेरैं।।
(श्रीगीतामृतगङ्गा)

भान-भवन बाजै रंग बधाई।
प्रकटी हैं कुँवरि लड़ैती राधा, सब सुख साधा वेदन गाई।।
यह रस प्रकट कियौ रसिकन हित, दूरि करी जग की जड़ताई।
मिटि गई विरह वेदना जिय की, सुनि हरषे मन कुँवर कन्हाई।।
सनकादिक-नारद नाचत करि, दरस कुँवरि मन आस पुराई।
'गोविंदसरन' फूले रसिक सुतन-मन, व्रजजन घर२ बात लुटाई।।
(श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यवाणी)

पूर्वोक्तदिव्यवचनै र्वृन्दावननिकुञ्जविहारिसर्वेश्वरश्रीकृष्ण-रसब्रह्मणः नित्यदिव्यपरमाह्लादिन्याः श्रीशक्त्याः संक्षेपेण यल्लोको-त्तरमहनीयमङ्गलमयस्वरूपं व्याख्यातं तत्तावत्सूक्ष्मरूपात्मकमेव। प्रेमाधिष्ठातृपरमाऽचिन्त्यमहाशक्त्या दिव्यस्वरूपपरिवर्णनं परमं दुस्तरातिदुस्तरमेव स्वाभाविकं सुस्पष्टं प्रतिभाति। केवलमत्रप्रस्तुत-''श्रीराधाराधनाऽऽ''ख्यग्रन्थेऽतीवसंक्षिप्तरूपेण स्वीयाऽऽनन्दायाऽऽ-त्मतुष्टये च किञ्चिद्-व्यलेखि।

गद्यात्मके स्वप्रणीते 'श्रीनिम्बार्कचरित'ग्रन्थेऽपि स्वसम्प्र-

दायोपासनाप्रसङ्गे सत्संक्षेपात्मकं विवेचनं विहितमस्माभिस्तद्विषये केनचिद्विदुषा सश्रमं समालोचना प्रकाशिताऽकारि। समालोचनायां यत्किमपि प्रत्यपादि तत्सर्वं समालोचना-लेखकस्वरूपानुकूलमेव प्रतीयते। ये विपश्चिद्वराः केवलं दोषदर्शनं स्वकीयं सौभाग्यं मन्यमानाः सन्तीति वरीयान्विषयः। अत्र हि बहूनां प्रेक्षावतामभिमतमस्तियद्-वराहः शुद्धान्नं विहाय नृपुरीषं लभते, तथैव शुद्धाम्बु संत्यज्य गर्ह्यतम-दौर्गन्धपूर्णे कर्दमे परमानन्दानुभवं स्वीकरोति। तथैवाभ्यन्तरे क्लिश्यमाना एवंविधाः केचन मन्दप्रतारकाः पण्डितंमन्याः श्रुत्युक्त-वचनानुसारेण सद्वचनमपहाय दोषकर्दमे निपतिताः प्रभवन्तीति चेखिद्यते चेतः। यथाहि 'अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः। दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथाऽन्धाः' अनया रीत्या तेषां कथं श्रेयः स्यादित्येव खेदावहोऽयं विषयः। समालोचना-लेखकः सुधीप्रवरो लिखति **यद्भवदीय शब्दवद्भगवदीयेति** शब्दसिद्धिर्नैव जायते। तत्रैतद्विषये श्रीभगवन्नि-म्बार्काचार्याणामाचार्यपरम्परायां तुरीयपीठाचार्यप्रवरश्रीमत्पुरुषोत्तमा-चार्यवर्यविरचित **'वेदान्तरत्नमञ्जूषाऽऽ'ख्य** मूलग्रन्थे तथा तद्ग्रन्थस्य विद्वन्मूर्द्धन्य-श्रीमदमोलकरामशास्त्रिमहाभागप्रणीत-**'कुञ्चिकेति'** सुप्रसिद्ध-विस्तृतव्याख्यायामपि **'भगवदीय'** शब्द सुस्पष्टतया दरीदृश्यते-**तद्यथा-'वेदान्तरत्नमञ्जूषायाम्' एतेनैव सर्वेषामपिभगवदीयगुणानां स्वरूपबद्ध्यापकत्वं मोक्षादि-दानहेतुत्वञ्चोक्तम्भवति।'** एवं हि 'कुञ्चिकाया'मपि-**'भगवदीय-गुणानां सत्त्वे मोक्षासाधारणहेतुत्वे चाऽपि' 'भगवदीयगुणस्य साधनान्तरसापेक्षत्वे' 'भगवदीयगुणगणस्य' 'भगवदीयानु-**

ग्रहाग्रादिगुणगणे इत्यर्थः'? एवंविधेषु बहुषु स्थलेषु **भगवदीयेति** शब्दप्रयोग उपलभ्यते। समालोचनालेखकमते शब्दोऽयमसंस्कृतः।

इदं तु प्रसङ्गानुसारेण प्रस्तुतप्रसङ्गे निरूपितमस्माभिः। अथाग्रे श्रीसर्वेश्वरप्रभोरनुग्रहेण कथं कथमपि श्रीराधासर्वेश्वर्याः केनाऽपिव्याजेन यदि समाराधनं चिन्तनं स्मरणञ्च प्रभवेत्तर्हि शोभनमेव। इत्त्थमेव स्वकीयस्वान्ते समवधार्य 'श्रीराधाराधना' नामकपुस्तिकैका सम्प्रकाशिता कदाचिदस्याः स्वाध्यायेन परमरसिक-भावुकभगवज्जनानां कृते लेशमात्रमपि श्रेयः स्यात्तर्हि परमं वरीयः।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज-

विरचित-

श्रीराधा-राधना

राधां सर्वेश्वरीं नत्वा कृष्णं कमललोचनम्।
श्रीमद्धसं प्रभुं वन्दे महर्षिसनकादिकान्।।१।।
देवर्षिं नारदं नौमि श्रीहरिभक्तिसम्प्रदम्।
निम्बार्काचार्यवर्य्यञ्च सम्प्रदायप्रवर्तकम्।।२।।
अथ श्रीमद्गुरुं ध्यात्वा तन्यते युग्मभक्तिदः।
'श्रीराधाराधना'ऽऽख्योयं लघुग्रन्थो हितावहः।।३।।

चराचर निखिल जगत् की अधीश्वरी सर्वेश्वरी कृष्णाह्लादिनी शक्ति श्रीराधा-वृन्दावनाधीश्वरी की एवं कमललोचन सर्वेश्वर श्रीकृष्ण की तथा साक्षात् कृष्णस्वरूप भगवान् श्रीहंस की, महर्षिवर्य्य श्रीसनकादिकों की देवर्षिवर्य श्रीनारदजी जो सर्वदा लोक मङ्गल के लिये श्रीहरिभक्ति प्रदान करने में ही तत्पर रहते हैं उनकी मङ्गल-अभिवन्दना के अनन्तर इस धराधाम पर सम्प्रदाय प्रवर्तक सुदर्शन-चक्रावतार आद्याचार्यवर्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की पावन अभिवन्दना के साथ स्वकीय परमाराध्य श्रीगुरुदेव आचार्यचरणों की वन्दना पूर्वक उनके दिव्य स्वरूप का ध्यान-चिन्तन करके श्रीवृन्दावननिकुञ्जविहारी युगलकिशोर श्यामाश्याम श्रीराधाकृष्ण भगवान् की दिव्य पराभक्ति प्रदान करने वाले ''श्रीराधाराधना'' नामक लघुकलेवर स्वरूप परम हितप्रद इस ग्रन्थ के प्रणयन का शुभारम्भ कर रहे हैं।।१,२,३।।

(१)

श्रीराधां राधिकां वन्दे श्रीयुतां कृष्णवल्लभाम्।
वृन्दावनरसाऽऽधारां निकुञ्जे केलितत्पराम्।।

श्रीवृन्दावन निकुञ्ज रस की एकमात्र जो परमाधार है तथा दिव्य नव नित्य निकुञ्जलीलारसविलास में अभिरत एवं अनिर्वचनीय लोकोत्तर दिव्यातिदिव्य शोभा से परिपूर्ण श्रीकृष्णवल्लभा परम प्रियतमा वृन्दावनाधीश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधा की मङ्गल-वन्दना करते हैं।।१।।

(२)

श्रीकृष्णवन्दितां राधां कालिन्दिकूलसंस्थिताम्।
सखीवृन्दैः समाराध्यां वन्देऽहं दिव्यसौभगाम्।।

अनन्त-अनन्त निकुञ्ज सखियों द्वारा सर्वदा समाराधित अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्डाधिपति सर्वनियन्ता भगवान् सर्वेश्वर श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण द्वारा सतत अभिवन्दित कलकलकल्लोलिनी कलिन्दजा श्रीयमुना के मङ्गल पावन पुलिन पर परम शोभायमान परम दिव्य स्वरूप श्रीराधासर्वेश्वरी की प्रणतिपूर्वक वन्दना करते हैं।।२।।

(३)

सुभगां गौरवर्णाङ्गीं श्रीवनरसिकेश्वरीम्।
सुकमनीयशोभाऽऽढ्यां नित्य स्मरामि राधिकाम्।।

अत्यन्त कमनीय परमदिव्य गौरवर्णस्वरूप श्रीवृन्दावनरस-रसिकेश्वरी सौन्दर्य-माधुर्य-कारुण्य-लावण्यादि परम सुन्दर शोभा से परिपूर्ण निकुञ्जेश्वरी श्रीराधा का प्रतिपल स्मरण करते हैं।।३।।

(४)

रात्रौ राधां दिवा राधां श्रीशां राधाञ्च राधिकाम्।
सततं राधिकां राधां स्मरामि राधिकां पुनः।।

नित्यनिकुञ्जविहारी सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की अपरिमित शक्तियों में सर्वोपरि दिव्य शोभा सम्पन्न परमाह्लादिनी शक्ति वृन्दावनाधीश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधा का प्रतिपल चाहे रात्रि हो या दिन उन्हीं का स्मरण, ध्यान, चिन्तन बना रहे यही आन्तरिक प्रार्थना है।।४।।

(५)

गृहे राधां वने राधां स्थले राधाञ्च राधिकाम्।
अभ्रे राधां जले राधां स्मरामि राधिकां मुहुः।।

चाहे घर हो या वन अथवा भूतल हो किंवा आकाश या जलाशय सर्वत्र सर्वदा उन्हीं कृष्णप्रिया परम कृपामयी रसिकाराध्या श्रीराधा सर्वेश्वरी का स्मरण बना रहे यही आन्तरिक स्पृहा है।।५।।

(६)

प्रभाते राधिकां दिव्यां सायं राधां रसावहाम्।
मध्याह्ने राधिकां राधां स्मरामि सर्ववैभवाम्।।

सुन्दर प्रभातवेला हो या सायं समय अथवा मध्याह्न का अवसर प्रत्येक समय में उत्तमोत्तम समस्त वैभवों से शोभायमान परम दिव्य स्वरूप हरिप्रिया श्रीराधा का ही प्रतिक्षण स्मरण जीवनाधार है।।६।।

(७)

दिक्षु राधां क्षितौ राधां मन्दिरे मञ्जु राधिकाम्।
सर्वार्थमुखदां राधां स्मरामि राधिकां प्रियाम्।।

समस्त दिशाओं में इस सम्पूर्ण भूमण्डल पर अथवा मङ्गलमय मनोहर मन्दिर में अभिवांछित समग्र सुख सम्पदाओं को प्रदान करने वाली परम मङ्गल स्वरूप परमप्रिया श्रीराधा का ही हम अनुदिन अविरलरूप से अभिचिन्तन करते हुए उन्हीं का ही स्मरण करते हैं।।७।।

(८)

कुञ्जे राधां व्रजे राधां सौरीतटे च राधिकाम्।
वृन्दावने सदा राधां निकुञ्जे नौमि राधिकाम्।।

कभी व्रज की पावन सुरम्य वसुधा पर तो सतत श्रीवृन्दावन में एवं नानाविध नव-नव तरु वल्लरियों की अति मञ्जुल कुञ्जों में तो कभी श्रीवृन्दावन की दिव्य कनक-मणिमुक्तामय परम कमनीय नित्य नवनिकुञ्ज में श्रीराधासर्वेश्वरी की सर्वात्मना अभिवन्दना करते हैं।।८।।

(९)

महारासस्थले राधां तरुवल्लीषु राधिकाम्।
कुसुमसौरभे राधां नौमि राधां सदा हृदा।।

श्रीवृन्दावन के महारास स्थल में परम मनोहारी लताद्रुमों के मध्य में नानाविध पुष्पों के कमनीय सौरभ अर्थात् सुगन्ध राशि में सर्वत्र श्रीराधा ही राधा को सर्वदा अपने अन्तर्हृदय से अभिनमन समर्पित हैं।।९।।

(१०)

वृन्दावनपथे राधां लता-पत्रेषु राधिकाम्।
मधुप-गुञ्जने राधां वन्दे राधां हरिप्रियाम्।।

श्रीधाम वृन्दावन के सच्चिन्मय दिव्य मञ्जुल मार्ग में श्रीराधा, सुन्दर सुरम्य लतावलियों की पत्र-पुञ्जों में सर्वेश्वरी श्रीराधिका, भ्रमर समूह के गुञ्जार में श्रीराधा, ऐसी हरिप्रिया श्रीराधा की अभिवन्दना करते हैं।।१०।।

(११)

खग-कलरवे राधां धेनु-यूथेषु राधिकाम्।
रसिकानां मुखे राधां ध्याये राधां रसप्रदाम्।।

शुक-पिक-सारिका-मयूर आदि पक्षी गणों के कूजन में श्रीराधा-श्रीराधा, अगणित गोवृन्द के मध्य में श्रीराधिका, परम भागवत अनन्य रसिकजनों की सरस रसना से समुच्चरित श्रीराधा, ऐसी दिव्य स्वरूपा परमानन्दसुधारससिन्धु श्रीराधा का हम सतत ध्यान करते हैं।।११।।

(१२)

श्रुति-तन्त्र-पुराणेषु श्रीराधां वृषभानुजाम्।
वृषभानुपुरे राधां भजे राधां रसेश्वरीम्।।

श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि समस्त शास्त्रों में वृन्दावनाधीश्वरी सर्वेश्वरी वृषभानुजा श्रीराधा का विपुल रूपेण परिवर्णन है। वृषभानुपुर अर्थात् बरसाना में सर्वत्र नित्यनवकिशोरी श्रीकृष्ण-प्राणप्रिया रसेश्वरी श्रीराधा का ही अविरल रूप से चतुर्दिक् समुच्चारण है ऐसी पराभक्ति प्रदायिनी श्रीराधा का हम भजन-चिन्तन करते हैं।।१२

(१३)

नन्दग्रामे व्रजे राधां गोवर्धने च राधिकाम्।
व्रजजनमुखे राधां नौमि श्रीराधिकां सदा।।

नन्दगांव में, गिरिराज गोवर्धन में, व्रजवासीजनों की मधुर सरस वाणी में, सर्वत्र व्रजधाम में, जहाँ भी श्रवणगत हो अनवरत श्रीराधा-श्रीराधा ऐसी परम कृपामयी करुणामयी श्रीराधा का हम मनसा वाचा कर्मणा अभिनमन करते हैं।।१३।।

(१४)

व्रजगोपीजने राधां गोपवृन्देषु राधिकाम्।
गोविन्द श्रीमुखे राधां राधां नमामि राधिकाम्।।

व्रजगोपाङ्गनाओं के द्वारा, व्रजगोपजनों के द्वारा, अनन्त कोटिब्रह्माण्डनायक सर्वेश्वर गोविन्द श्रीकृष्ण के श्रीमुख द्वारा, प्रतिपल श्रीराधा, श्रीराधा यही दिव्य संकीर्तन श्रवणगोचर होता है ऐसी महारसाधिष्ठात्री निकुञ्जेश्वरी श्रीराधा प्रिया को कोटि-कोटि प्रणति समर्पित करते हैं।।१४।।

(१५)

सौन्दर्य-मार्दवे राधां लालप्ये राधिकां मुदा।
कारुण्ये कोमलां राधां माधुर्ये राधिकां भजे।।

सौन्दर्य-माधुर्य-लावण्य-कारुण्य-मार्दवादिदिव्यानन्त-गुणगणों में परमाह्लादिनी शक्ति रससिन्धुस्वरूपा श्रीकृष्णप्रिया श्रीराधा ही सर्वतोमुख्य है ऐसी उन अकारणकरुणामयी श्रीराधा का हम आनन्दपूर्वक अन्तःकरण से भजन ध्यान करते हैं।।१५।।

(१६)

रसवाणीसु सम्पाद्यां श्रीराधां राधिकां शुभाम्।
श्रीकृष्णवेणुसद्गीतां श्रीराधां सततं भजे।।

श्रीवृन्दावनपरक सरस महावाणी आदि रसवाणी ग्रन्थों में जिनका अत्यन्त मनोहारी परिवर्णन हुआ है, जगन्नियन्ता परात्परतत्त्व रसपरब्रह्म वृन्दावनाधीश सर्वेश्वर श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण अपनी मञ्जुल मुरली को अपने दिव्य अधरों पर धारण कर उसके द्वारा निरन्तर श्रीराधा-श्रीराधा यही परमानन्दप्रद स्वरसुधा निर्झरित करते हैं जो अतीव अनिर्वचनीय है ऐसी निकुञ्जरसाधिष्ठात्री व्रजेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधा का हम अपने पवित्रान्तःकरण से भजन करते हैं।।१६।।

(१७)

श्रीयमुनावारिधारायां श्रीराधां राधिकां वराम्।
दिव्यलावण्यसम्पन्नां श्रीराधां रसिकां भजे।।

कलकल कल्लोलिनी कालिन्दी श्रीयमुना की दिव्य जलधारा में गम्भीर कलकल घोष में प्रतिपल श्रीराधा-श्रीराधा यही श्रुतिगोचर होता है ऐसी परमदिव्य लावण्यपरिपूर्ण परमरसिकास्वरूपा श्रीराधा का भजन ही जीवन सर्वस्व है।।१७।।

(१८)

वृन्दादलेषु श्रीराधां वृन्दया सेवितां सदा।
वृन्दावननिकुञ्जेषु श्रीराधां भावितां भजे।।

वृन्दादेवी श्रीतुलसीवृन्द जिनके प्रतिपत्र में श्रीराधा, तुलसीदल समूह से जिनकी सर्वदा अर्चा की जाती है जो वृन्दावन के

निकुञ्ज धाम में निज सखी-परिकर द्वारा सतत भावित अर्थात् भावनापूर्वक समुपासित होती है इत्थं स्वरूपा श्रीराधा का हम भजन आराधन करते हैं।।१८।।

(१९)

व्रजे राधां व्रजे सेव्यां व्रजे गेयाञ्च राधिकाम्।
व्रजे सिद्धां व्रजे ध्येयां भजामि राधिकां व्रजे।।

सर्वोपरि धाम श्रीव्रज वसुन्धरा पर श्रीराधा, व्रज में सर्वदा परिसेव्य, समस्त व्रज में जिनके परम रसमय मङ्गल नाम का ही गान होता है, व्रज में सर्वत्र प्रसिद्ध और सर्वदा आराधनीय श्रीव्रजधाम में सतत सुशोभित श्रीराधासर्वेश्वरी का सर्वविधा भजन ही एकमात्र परम लक्ष्य है।।१९।।

(२०)

ललिता-रङ्गदेवीश्री-हिता-हरिप्रियाऽऽदिभिः।
निकुञ्जे सेवितां राधां श्रीयुतां राधिकां भजे।।

ललिता-रङ्गदेवी-हितु-हरिप्रिया-विशाखा-तुङ्गविद्या-इन्दुलेखा चित्रादि नित्यनव-सखीवृन्दों द्वारा जिनकी वृन्दावन नवनिकुञ्ज में विविधोपचारपूर्वक सोल्लास सेवा-समर्चा सम्पादित होती है, जो अनिर्वचनीय दिव्यातिदिव्य अनुपम शोभायुक्त विराजित नित्यरासेश्वरी परमाह्लादिनी कृष्णप्रिया श्रीराधा का मधुर-उपासना परिपूर्ण प्रभजन करना ही जीवनसर्वस्व है।।२०।।

(२१)

रसाऽद्भुतसुधासिक्तां राधां स्मरामि राधिकाम्।
अनन्यरसिकैर्गेयां श्रीराधां रसनिर्झराम्।।

निकुञ्ज रस के अद्भुत सुधास्वरूप आनन्द से परिपूर्ण अनन्य रसिकजनों द्वारा स्वकीय अनन्त अनिर्वचनीय दिव्य गुणगणों से परिवर्णित किंवा उन्हीं रसकिजनों द्वारा विविध मङ्गल मधुर वाद्य संवलित ललित कण्ठ से सम्प्रगीत एवं दिव्यानन्दरसनिर्झरण स्वरूपा श्रीराधा उनका प्रतिक्षण अपने अन्तर्मानस में अनुस्मरण ही जीवन सर्वाधार है।।२१।।

(२२)

श्रीराधां मथुरापुर्यां गोकुले कृष्णवल्लभाम्।
श्रीव्रजमण्डले राधां वन्दे राधां व्रजेश्वरीम्।।

मथुरापुरी के व्रजरसिकों लताद्रुमों एवं श्रीयमुना के गम्भीर घोष से श्रीराधा की ही मङ्गल मधुर ध्वनि, इसी प्रकार गोकुल में भी कृष्णवल्लभा श्रीराधा का ही अभिचिन्तन एवं समस्त व्रज-मण्डल में सर्वत्र जहाँ भी दृष्टिपात करें व्रजेश्वरी व्रजजनजीवनाधार श्रीराधा ही राधा हैं उनकी नित्य अभिवन्दना करते हैं।।२२।।

(२३)

राधाकुण्डे प्रियां राधां दिव्यरूपां रसाधिपाम्।
श्यामकुण्डे शुभां श्यामां स्मरामि राधिकां मुहुः।।

गिरिराज गोवर्धनवर्ती राधाकुण्ड में चतुर्दिक् श्रीराधा ही राधा, इसी प्रकार श्यामकुण्ड में भी समस्त दिशायें श्रीराधा नाम से प्रगुञ्जित ऐसी परम दिव्यस्वरूपा रसाधिपा सर्वदा मङ्गलप्रदा नित्य श्यामा श्रीराधा का अनवरत स्मरण करते हैं।।२३।।

(२४)

असीमकरुणापूर्णां राधां राधाञ्च राधिकाम्।

रासेश्वरीं महारसे रासलास्यकरीं भजे।।

श्रीवृन्दावन में अति सुरम्य महारास स्थल पर अपने हृदयेश्वर सर्वेश्वर नित्यनिकुञ्जविहारी श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण जो अनन्त सहचरी परिकर से परिशोभित हैं उनके मध्य महामङ्गलमय नृत्य में अभिराजित रासेश्वरी श्रीराधा जो अनन्तकरुणार्णव स्वरूपा हैं उनका अहर्निश भजन स्मरण करते हैं।।२४।।

(२५)

राधां राधां सदा राधां श्रीराधां रससम्पदाम्।
वृन्दावननिकुञ्जस्थां दिव्याऽऽभां नौमि राधिकाम्।।

जिनकी दिव्य प्रभा अनिर्वचनीय है जो श्रीवृन्दावन नव-नित्यनिकुञ्ज में अतिशय सुशोभित हैं, परम सच्चिन्मयरूपा अखिलरसामृतसिन्धु स्वरूपा नित्य सहचरी परिकर परिसेविता वृन्दावनेश्वरी सर्वेश्वरी श्रीराधा को कोटि-कोटि प्रणति समर्पित है।।२५।।

(२६)

मधुरां मञ्जुलां राधां जगद्बीजाञ्च राधिकाम्।
विधीशेन्द्रादिगीर्वाणैरुपास्यां राधिकां भजे।।

श्रीराधा-इस यावन्निखिल चराचरात्मक जगत् की एकमात्र परमाधारस्वरूपा हैं, ब्रह्मेन्द्रादिसुरवृन्दों द्वारा सर्वदा समुपासनीय हैं। जो अतीव मधुर मञ्जुल स्वरूप से अभिराजित हैं उन नित्य-नवकिशोरीस्वरूपा श्रीराधा को हम अपने हृदयस्थल में विराजित कर उन्हीं का भजन मनन करते हैं।।२६।।

(२७)

निकुञ्जकिङ्करीभिश्चाऽऽवृतां राधाञ्च राधिकाम्।
ताभिरुच्चरितां राधां स्मरामि राधिकां हृदि।।

श्रीधाम वृन्दावन की निकुञ्ज सखियों में परम शोभायुक्त और उन्हीं सखी परिकर द्वारा सर्वदा जय-जय श्रीराधे! श्रीराधे! श्रीराधे! इन रससुधा परिपूर्ण सम्बोधन परक इन महामङ्गलस्वरूप नाम माधुरी का अपनी ललित कलित कण्ठ से समुच्चारण की गई नित्यरासेश्वरी श्रीराधा का अपने अन्तःकरण में सर्वदा स्मरण करते हैं।।२७।।

(२८)

नीलाम्बरप्रभायुक्तां सखीचामरसेविताम्।
कोटीन्दुसौभगां राधां भजेऽहं राधिकामहो।।

नीलाभ कौशेयवसन अर्थात् नीलवर्णयुक्त रेशमी साडी से अतिशय शोभायुत निकुञ्ज-सखीजनों द्वारा चँवर-सेवा से परम सुभगस्वरूप कोटि-कोटि शारदीय चन्द्रमाओं से भी अत्यन्त कमनीय ऐसा महामञ्जुलस्वरूप जो अतीव विस्मयकारी है ऐसी परम-लावण्यसम्पन्ना रससुधावर्षिणी श्रीराधा का हम भजन करते हैं।।२८

(२९)

वृन्दावननिकुञ्जेषु सखीवृन्दैः समीडिताम्।
श्रीराधां परमां राधां स्तौमि राधाञ्च राधिकाम्।।

श्रीमद्वृन्दावन की दिव्य निकुञ्ज में सखी समूह द्वारा अतीव उल्लास पूर्वक मङ्गल-स्तुति से समाराधित श्रीकृष्ण परम-प्रियतमा रसिकेश्वरी श्रीराधा प्रिया की हम अपनी यथामति सभक्ति

सुमधुर स्तुति कर रहे हैं।।२६।।

(३०)

वसन्तसमये प्रातः साकं सखीकदम्बकैः।
श्रीराधां विहरन्तीञ्च स्मरामि हरिणा युताम्।।

वसन्त ऋतु के अति सुरम्य अवसर पर सुप्रभात की मङ्गलवेला में सखीवृन्द के साथ मध्य में अपने हृदयेश्वर परमप्रेमास्पद वृन्दावनविहारी श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण सहित श्रीवृन्दावन की मञ्जु-कुञ्जों में दिव्य विहार परायण निकुञ्जकेलिरससुधावर्षिणी सर्वेश्वरी श्रीराधा का अक्षुण्णरूपेण स्मरण हो यही अपने अन्तर्मानस में प्रबल उत्कण्ठा है।।३०।।

(३१)

नवनीलाऽरुणाम्भोज - सुमाल्यपरिशोभिताम्।
श्रीराधां राधिकां वन्दे स्वकाऽङ्घ्रिभक्तिसम्प्रदाम्।।

सद्यः नवीन नीलाभ रक्तोत्पल (गुलाबी) की अतिसुन्दर माला को धारण की हुई परम सुशोभित और स्वकीय श्रीयुगल-चरणारविन्द की दिव्य पराभक्ति प्रदान करने में अत्यन्त उदार स्वरूप श्रीकृष्णवल्लभा रसाधिष्ठात्री परमाह्लादिनी शक्ति श्रीराधा की मंगल अभिवन्दना करते हैं।।३१।।

(३२)

कदम्बमञ्जुकुञ्जाऽग्रे दिव्यदुर्वाङ्कुरस्थले।
विक्रीडन्तीं सखीवृन्दैः सार्द्धं राधां भजे प्रियाम्।।

कदम्ब तरुवरों की परम मञ्जुल कुञ्जों के सन्मुख हरित दिव्य दुर्वा से अतिशय सुशोभित सुविस्तीर्ण सुभग स्थल प्राङ्गण में

अगणित सखीवृन्दों के साथ विविध केलि विलासरत कृष्णप्रिया श्रीराधा उनकी मङ्गल दिव्योपासना पूर्वक भजन-कीर्तन करते हैं।।३२।।

(३३)

कदम्ब-कदली-जम्बू-निम्बपादपवर्तिनाम्।
पिकानां चारुनिःस्वानै र्हर्षितां राधिकां भजे।।

कदम्ब-केला-जामुन-नीम आदि सुन्दर तरुवरों पर मुदित मुद्रा में अवस्थित कोकिल-वृन्द के कमनीय निनाद के श्रवण से परम प्रमुदित कृष्णप्रियतमा श्रीराधा का सर्वविधया भजन करते हैं।।३३।।

(३४)

शुभ्र-नीलाऽरुणाऽम्भोज-मञ्जुकुञ्जेषु राजिताम्।
श्रीराधां राधिकां राधां पुनः श्रीराधिकां भजे।।

श्वेत-नील-लाल आदि विविधरूपात्मक कमल कुसुम-कुञ्जों में पुलकित-मनस्क विराजित श्रीश्यामप्रिया नित्यनवकिशोरी सर्वेश्वरी श्रीराधा का अनवरत भजन ही मनुज जीवन का सार सर्वस्व है।।३४।।

(३५)

वृन्दाविपिनवीथीषु विहरन्तीश्च राधिकाम्।
कुञ्जविहारिणा सार्द्धं स्मरामि राधिकां वराम्।।

श्रीधाम वृन्दावन की सच्चिन्मयी दिव्य वीथियों (गलियों) में वृन्दावननिकुञ्जविहारी रसिकेश्वर श्रीकृष्ण प्रभु के संग कलित केलिविहार रसविलासनिरत मनोहर विहार करती हुई परम वरेण्य

श्रीराधिकाजी का स्मरण करते हैं।।३५।।

(३६)

कनक-कुण्डलज्योत्स्ना-रम्यां राधां वरप्रदाम्।
केयूर-किङ्कणी-काञ्ची-चर्चितां राधिकां भजे।।

सुवर्ण कुण्डल की दिव्यप्रभा से परम सुशोभित, केयूर, किङ्कणी काञ्ची आदि विविध मङ्गलप्रद नव-नव आभूषण-अलङ्कारों से अतिशय सुसज्जित वरप्रदायिनी श्रीराधिकाजी का सर्वात्मना भजन करते हैं।।३६।।

(३७)

सिताम्भोज-महाकुञ्जे कृष्णेन सार्द्धमञ्जसा।
व्रजन्तीं राधिकां वन्दे श्रीराधां राधिकां प्रियाम्।।

श्वेत कमल की दिव्य भव्य कुञ्ज में निकुञ्जमोहन रास-विहारी सर्वेश्वर श्रीकृष्ण के संग तीव्र गति से पधारती हुई श्री-कृष्णवल्लभा प्रिया श्रीराधा उनके युगलपदाम्बुजों में प्रणतिपूर्वक वन्दना अर्पित करते हैं।।३७।।

(३८)

रविजा-मध्यधारायां तरणिसंस्थितां प्रियाम्।
श्रीराधां शुभदां राधां वन्दे सहचरीनुताम्।।

श्रीयमुना की मञ्जुल अगाध जल धारा में नौका से जल-विहार करती हुई श्रीराधा जो निकुञ्ज सहचरियों द्वारा सर्वदा अभिवन्दित परमकल्याणकारिणी श्रीराधाप्रिया की साञ्जलि अहर्निश अभिवन्दना करते हैं।।३८।।

(३९)

विहगैः कीर्तितां राधां रसिकैः समुपासिताम्।
विपिने मुदितां राधां नितरां नौमि राधिकाम्।।

शुक-पिक-सारिका-कोकिल-मयूरादि खगवृन्दों द्वारा जिनका निरन्तर यशोगान होता है तथा परम भागवत भगवद्-रसिकों द्वारा जो अनवरत सर्वविध रूप से समुपासित हैं एवं श्रीमद्वृन्दावन श्रीनिकुञ्जधाम में प्रतिपल परम हर्षित श्रीराधा-सर्वेश्वरी को पुनि-पुनि अभिनमन करते हैं।।३९।।

(४०)

सर्वदोल्लसितां राधां श्रीमद्वृन्दावनेश्वरीम्।
कोटिराकेशलावण्यां श्रीराधां नौमि राधिकाम्।।

कोटि-कोटि चन्द्रमाओं से भी श्रेष्ठतम जिनका लोकोत्तर असमोर्ध्व स्वरूप है जो सर्वदा प्रमुदित रूप से विराजित हैं ऐसी श्रीमद्वृन्दावनेश्वरी श्रीराधाप्रिया के श्रीयुग्मपदारविन्दों में सर्व-विधया अभिनमन करते हैं।।४०।।

(४१)

नित्यरासमहाकेल्यां लास्यदक्षाञ्च राधिकाम्।
श्रीराधां सततं वन्दे कृष्णेन हरिणा सह।।

श्रीवृन्दावन निकुञ्ज में नित्य परम रासलीला में लास्य विलास में अतिशय प्रवीण, निकुञ्जमाधव मदनमोहन श्याम-सुन्दर श्रीकृष्ण के वामाङ्ग में विराजित श्रीराधा निकुञ्जेश्वरी की सतत वन्दना करते हैं।।४१।।

(४२)

परात्परतमां राधां निगमागमवर्णिताम्।
योगि-यतिमहाप्राज्ञैर्वन्दितां राधिकां भजे।।

वेद-पुराणादि समग्र शास्त्रों में जिनका दिव्यातिदिव्य प्रतिपादन हुआ है। योगी-यति-महामनीषीजनों द्वारा जो सर्वतोभावेन अभिवन्दित हैं ऐसी परात्परतमा वृन्दावनेश्वरी श्रीराधा है उनका हम सर्वविधिना भजन आराधन करते हैं।।४२।।

(४३)

प्रपन्नभक्तिदां राधां श्रीकृष्णाह्लादिनीं प्रियाम्।
लीलाविलासनिष्णातां वन्दे राधां स्वकान्तरे।।

वृन्दावन निकुञ्जलीला विलास में अतिशय सदक्ष, सर्व-नियन्ता सर्वेश्वर श्रीकृष्ण की परमाह्लादिनी शक्ति स्वरूपा, शरणापन्नजनों को पराभक्ति प्रदान करने में सर्वदा कृपावृष्टिपरायण निकुञ्जप्रिया रसिकाराध्या नित्यकिशोरी श्रीराधा की अपने चित्त में अनवरत अभिवन्दन करते हैं।।४३।।

(४४)

अनन्तरूपलावण्यामनन्तवैभवप्रदाम् ।
अनन्तानन्दसम्पन्नां श्रीराधां राधिकां भजे।।

अनन्त अनिर्वचनीय लावण्यमय जिनका दिव्य स्वरूप है, अनन्त असीम वैभव प्रदायिनी, अनन्त दिव्यातिदिव्य आनन्द-सुधा से परिपूर्ण दिव्यानन्दधाम वृन्दावनाधीश्वरी श्रीराधा का सर्वात्मना भजन करते हैं।।४४।।

(४५)

शरणागत भक्तार्थं सर्वसौख्यप्रदां शुभाम्।
कृपाधाममहारूपा ध्याये राधां हरिप्रियाम्।।

शरणागत रसिक भक्तों को परमानन्द प्रदान करने वाली सर्वदा मङ्गलकारी परम कृपामयी दिव्य स्वरूपा हरिप्रिया श्रीराधा का अपने हृदयस्थल में ध्यान करते हैं।।४५।।

(४६)

महावाणीमहावाक्यैश्चर्चितां चारुवर्णिताम्।
भजेऽहं राधिकां राधां सर्वदा मोक्षदायिनीम्।।

रसिकराजराजेश्वर आचार्यवर्य जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज द्वारा अपने रसग्रन्थ ''श्रीमहावाणी'' में जिनके ललित लीलाविलास का लोकोत्तर परमदिव्य परिवर्णन है और जो सर्वदा शरणागत रसिकभक्त को भवबन्धन से उन्मुक्त कर भगवद्भावापत्तिरूप मोक्ष को प्रदान करने वाली रसिकाराध्या श्रीराधा का हम भजन करते हैं।।४६।।

(४७)

कदम्ब-पादप-च्छायायामभ्रैरभिगर्जिताम्।
श्रीराधां रसदां राधां नमामि सर्वसम्पदाम्।।

कदम्ब तरुवर की सुखद शीतल गहन छाया में मेघमालाओं द्वारा उनके गम्भीर गर्जन में जय-जय श्रीराधे जय-जय श्रीराधे की मधुर मन्द ध्वनि से समुच्चरित एवं व्रज की सर्वस्व निधि स्वरूप, रसिकजनों को सर्वदा परमानन्द प्रदान करने में अभिरत, ऐसी परम करुणामयी श्रीराधा के युगलचरणारविन्दों में प्रणतिपूर्व अभिनमन

है।।४७।।

(४८)

वृन्दावनरसज्ञैश्च रसिकैर्हृदि भाविताम्।
श्रीराधामनिशं राधां स्मरामि राधिकां शुभाम्।।

श्रीवृन्दावन के श्रीयुगललीलाविलासरस के मर्मज्ञ-रसज्ञों के द्वारा एवं निकुञ्जरसोपासक रसिकमहानुभावों द्वारा अपने-निर्मलान्तःकरण से निरन्तर समुपासित परममङ्गलप्रदा स्वामिनी लाडिली कृष्णप्रिया किशोरी श्रीराधा का अनुदिन अपने मानस में अविरलरूपेण स्मरण करते हैं।।४८।।

(४९)

निम्बार्काचार्यवर्य्यैश्च रसिकाचार्यहृद्गिरा।
सर्वदाऽऽराधितां राधां स्मरामि रससागराम्।।

सुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य एवं वृन्दावनरस-रसिकाचार्यों के हृदय से आविर्भूत दिव्य वाणी द्वारा निशिदिन समाराधित, निकुञ्जरससुधासिन्धुस्वरूपा श्रीराधा का स्मरण करते हैं।।४९।।

(५०)

महावाणी-महाग्रन्थे निकुञ्जरसभाविते।
सुप्रतिपादितां राधां वन्दे श्रीवनकुञ्जगाम्।।

परमाचार्यवर्य रसिकराजराजेश्वर जगद्गुरु निम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विरचित

निकुञ्जरसपरिपूर्ण वृहद्ग्रन्थ ''श्रीमहावाणी'' में सम्यक् प्रकार से प्रतिपादित रसेश्वरी श्रीराधा जो श्रीवृन्दावन दिव्य मञ्जुल कुञ्जों में ललित के लि विहार अभिरत हैं उनकी मङ्गल --वन्दना करते हैं।।५०।।

(५१)

कुञ्जप्रासादिव्याभापूरितविपिनस्थले ।
रुचिरां राधिकां नौमि श्रीराधां सुप्रभायुताम्।।

श्रीनिकुञ्ज महल की दिव्य शोभा से अतिशय सुन्दर श्री वृन्दावन के सुरम्य स्थल पर विराजित दिव्य प्रभायुक्त नित्य-नवकिशोरी श्रीराधा के श्रीयुगलचरणकमलों में अभिनमन समर्पित करते हैं।।५१।।



(१)

श्रीराधासर्वेश्वरी, राजत कुञ्ज ललाम।
वृन्दावन रस माधुरी, 'शरण' मुदित अविराम।।

(२)

कुञ्ज-कुञ्ज में राधिका, कुञ्ज-कुञ्ज में श्याम।
विहरत अविरल युगलवर, 'शरण' कुञ्जवन धाम।।

(३)

अनुपम दर्शन राधिका, श्रीराधा शुभ आभ।
मञ्जुल मोहनकुञ्ज में, 'शरण' दरश अति लाभ।।

(४)

श्रीराधा वन कुञ्ज में , विहरत सखी समाज।
यमुना अनुपम सुभग तट, 'शरण' सुशोभित आज।।

(५)

श्रीराधे! श्रीमुख वदत, पुलकित विहरत श्याम।
सखीवृन्द प्रमुदित अहो, 'शरण' सुभग वन धाम।।

(६)

राधा-राधा रटत नित, शुक-कोकिल-कलहंस।
मोर-सारिका-खटक-कुल, 'शरण' विहग-अवतंस।।

(७)

जो जन राधा नाम का, कीर्तन करता रोज।
श्रीराधा अनुपम कृपा, 'शरण' मिलै शुभ मोज।।

(८)

श्रीराधा करुणामयी, कृपासिन्धु रसधाम।
पराभक्ति प्रदायिनी, 'शरण' भजो अविराम।।

(९)

राधा राधा राधिका, उचरत नन्दकुमार।
श्रीराधा प्रमुदित सदा, 'शरण' कृपा आधार।।

(१०)

निज रसना प्रतिपल रटो, राधा रसमय नाम।
सुखमय शुभ जीवन बने, 'शरण' भजो निष्काम।।

(११)

राधा कुञ्जविहारिणी, सुन्दर नवलकिशोर।
रासलीला-विलासिनी, 'शरण' भजो नित भोर।।

(१२)

श्रीराधा जय राधिका, नन्द-यशोदा-लाल।
भजो निरन्तर युगलवर, निज मन 'शरण' निहाल।।

(१३)

श्रीराधा वृषभानुजा, माधव नन्दकिशोर।
शोभित श्रीवनराज में, 'शरण' रसिक शिरमोर।।

(१४)

वरसाना गह्वर-विपिन, मोरकुटी विश्राम।
श्रीराधा प्रिय सखी सह, 'शरण' दरश अविराम।।

(१५)

राधा-राधा सतत नित, निज रसना उच्चार।
राधा पावन पदसरोज, 'शरण' हृदय सञ्चार।।

(१६)

श्रीराधा रससिन्धु है, दर्शन यमुना-तीर।
सह वृन्दावन कृष्णचन्द्र, 'शरण' सखीजन भीर।।

(१७)

श्रीराधा व्रजस्वामिनी, अलवेली सरकार।
श्रीव्रजवल्लभ-प्रियतमा, 'शरण' नमत व्रजनार।।

(१८)

श्रीराधा शुभ नाम का, अविरल कर हिय जाप।
राधा अति करुणामयी, 'शरण' नशत संताप।।

(१९)

कुञ्ज-कुञ्ज प्रतिकुञ्ज में, विहरत राधाकृष्ण।
सखीवृन्द जय-जय करत, 'शरण' सतत सतृष्ण।।

(२०)

द्रुतगति धावत युगलवर, झूलन हित निजकुञ्ज।
झूलत श्यामाश्याम रुचि, 'शरण' संग सखिपुञ्ज।।

(२१)

श्रावण वृन्दावन अवनि, वरषत मेघ अपार।
झूलत राधाकृष्ण नित, 'शरण' सखी सञ्चार।।

(२२)

श्रीवन घन गर्जन करै, राधा-राधा नाद।
दादुर राधा करत धुनि, 'शरण' हंस निर्हाद।।

(२३)

पावस ऋतु श्यामल घटा, चातक करत निनाद।
राधा राधा रटत नित, 'शरण' श्रवण प्रिय स्वाद।।

(२४)

पल-पल राधा-राधिका, कोकिल कूजत कीर।
वसन्त ऋतुकाल में, 'शरण' विहङ्गम-भीर।।

(२५)

वरसाना होरी सुभग, लसत राधिका-श्याम।
सखीवृन्द सेवा निरत, 'शरण' दरश अभिराम।।

(२६)

भर पिचकारी राधिका, छोड़त पुनि-पुनि रङ्ग।
छाई अवीर गगन में, 'शरण' सखी हरि-सङ्ग।।

(२७)

हो हो होरी केलिरत, श्रीराधा-घनश्याम।
कुंज सखीजन जय करत, 'शरण' होरी व्रजधाम।।

(२८)

विविध लता-तरु कुसुमकुंज, शोभित राधाकृष्ण।
युगल-छवि लख सखीप्रवर, प्रमुदित 'शरण' सतृष्ण।।

(२६)

अहो राधिके लाडिली, वरसाना व्रजधाम।
शोभित सखी समूह मध्य, 'शरण' प्राण व्रजवाम।।

(३०)

अहो राधिके लाडिली, कृपारूप रस धाम।
अतीव करुणासिन्धु, 'शरण' विलोकत श्याम।।

(३१)

पल न तजो अविरल भजो, भजो राधिका नाम।
तभी नृजीवन सफल है, 'शरण' सभक्ति प्रणाम।।

(३२)

शरण-शरण हम शरण हैं, राधा-पद अविराम।
वरण युगल श्रीचरण है, 'शरण' तभी विश्राम।।

(३३)

परम कठिन भव-विपद है, आश्रय राधा-नाम।
अति करुणार्णव राधिका, 'शरण' स्मरण निष्काम।।

(३४)

वृथा सकल भव-चाकचिक्य, उससे जीव अशान्त।
श्रीराधा भज राधिका, 'शरण' नित्य निशान्त।।

(३५)

समय चक्र अति प्रबल है, चलत त्वरित अविराम।
श्रीराधा नित भजन हो, 'शरण' श्रेष्ठ यह काम।।

(३६)

पल-पल भज-भज राधिका, भजन करो श्रीश्याम।
जीवन रसमय शान्तियुत, 'शरण' बनै शुभ काम।।

(३७)

अतुलित वैभव विपद्रूप, राधा भज सुख जान।
श्रीहरि गोविन्द नाम रट, 'शरण' शान्ति ध्रुव मान।।

(३८)

धरो ध्यान श्रीराधिका, करो कृष्ण का गान।
वृन्दावन शुभ वास हो, 'शरण' तरणिजा-स्नान।।

(३९)

श्रीराधा जप ध्यान हो, श्रीराधा गुण गान।
श्रीराधा नित कीर्तन, 'शरण' करो मतिमान।।

(४०)

निज रसना राधा रटो, करो निरन्तर ध्यान।
व्रज-गोवर्धन-नीमगांव, 'शरण' वसो तज मान।।

(४१)

श्रीव्रज वीथिन राधिका, विहरत सखिजन साथ।
कुंज-कुंज वन-कुंज में, 'शरण' व्रजालि-सनाथ।।

(४२)

वही वाणी अथ लेखनी, सार्थक समझो आप।
श्रीराधा गुण गान रत, 'शरण' वही निष्पाप।।

(४३)

वह दिन वह पल सफल है, सुमिरो राधा नाम।
कालचक्र गतिशील है, 'शरण' भजो घनश्याम।।

(४४)

भौतिक लिप्सा त्यागकर, राधा नाम उचार।
कृपा करेगी स्वामिनी, 'शरण' सदा उदार।।

(४५)

नर जीवन पातक सहज, मन का नीच विचार।
यदि श्रीराधा-हरि भजन, 'शरण' विरुद्ध निवार।।

(४६)

मृत्यु से भय ना करैं, भजिये राधेश्याम।
अनुग्रहविग्रह युगलवर, 'शरण' वरण निजधाम।।

(४७)

श्रीराधा जय राधिका, भजिये सात्विक भाव।
अन्तराय सब स्वतः शमन, 'शरण' कृपा अभिधाव।।

(४८)

अन्तर्मन में अहर्निश, श्रीराधापदकंज।
चिन्तन सुन्दर भावयुत, 'शरण' सहज अघ भंज।।

(४९)

पराभक्तिरसदायिनी श्रीराधा रससिन्धु।
वृन्दावन-नवकुञ्जगा, 'शरण' झरण रसबिन्दु।।

(५०)

कहाँ भक्ति रस भावना, कहाँ साधना ध्यान।
एकमात्र अवलम्ब है 'शरण' राधिका गान।।

(५१)

राधासर्वेश्वरप्रभू, - राधामाधवरूप।
प्रतिपल अभिचिन्तन बनै, 'शरण' विलय अघ-कूप।।

*

(१)

श्रीराधा राधा, जय-जय राधा,
वृन्दावन राधा, वंशीवट राधा।
हरिप्रिया राधा, विलय सब बाधा।।
व्रज धन राधा, वन कुञ्ज राधा,
यमुन-तट राधा, नलिन-वन राधा।
रास रस राधा, नृत्यत ता धा।।
लता-तरु राधा, कुसुम-कलि राधा,
वेणु रव राधा, धेनु-मुख राधा।
मधुप गुञ्ज राधा, रसिक-आराधा।।
सखि हिय राधा, खग-रव राधा,
व्रज-रज राधा, व्रज-गिरि राधा।
'शरण' मन राधा, चरण अगाधा।।

(२)

राधा-चरण सरोरुह सुन्दर।
प्रतिपल सखिजन समुपासत हैं,
विधि-शिव-सुरपति ध्यावत अन्तर।।
अविरल मुनिजन दर्शन वांछत, अति दुर्लभतम अमृतनिर्झर।
चन्दन-चर्चित परमरुचिर शुभ,
किङ्कणि-कलरव कलित मधुरतर।।
श्रीवन भावुक सुभग रसिकवर, आराधनरत चित्त निरन्तर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अद्भुत सुरभित चरणयुगलवर।।

(३)

अविरल राधा नाम उचारो।
नामलेत ही अन्तर्मन के, पाप-ताप सब स्वतः विसारो।।
राधा-राधा रटो राधिका, प्रतिपल राधा निज हिय धारो।
जन्म२ की जगत-कामना, जय२ ध्वनि कर तुरत निवारो।।
सुधा रूप यह अनुपम पावन, अतिशय मंगल नाम सहारो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, प्रिया राधिका नाम पियारो।।

(४)

श्रीराधा वृषभानुकुमारी।
व्रज वरसाना गह्वर वन में, विहरत सखि सह दरश महारी।।
अनवरत रटत राधा-राधा, खगकुल पुलकितम परम सुखारी।
नव तरु लतिका शीतल छाया, मोर रूप धर नचत विहारी।।

केका-वाणी उचरत पुनि२, लखि शुभ शोभा मुदित पियारी।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, आज अति हर्षित श्रीगिरिधारी।।

(५)

श्रीवन जीवन जय श्रीराधा।
कुंजविहारी अति प्रमुदित हैं, श्रीमुख-मुखरित राधा-राधा।।
कुंजसखी सब अति पुलकित हो, उचरत राधा प्रतिहत बाधा।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीवन वरषत रस अवसाधा।।

(६)

श्रीराधा रस अनुपम धारा।
रास विहारी रस धारा में, अवगाहन कर रस विस्तारा।।
सखीवृन्द सब उत्कण्ठित हो, रसधारामृतसार निहारा।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय राधा रस भव निस्तारा।।

(७)

श्रीराधा वरषत रस धारा।
यह रसधारा अति दुर्लभ है, रसिक उपासक हिय अवधारा।।
सुरगण वांछत नहि पावत है, व्रज-वृन्दावन-कुंज प्रसारा।
श्रुति-तन्त्रादिक सूत्ररूपमय, रसवाणी-रस अति विस्तारा।।
महाभाव रस सुधासिन्धु है, यह रस कणिका सन्त सहारा।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, सुधबुध खोवत सुधीवर सारा।।

(८)

राधा रटत नशत भवबाधा।

राधा नाम सुधा रस पूरित, जो चित धारत परम अगाधा।।
अतिशय पावत सुभग सरस रस, जीवन मङ्गल रहत अबाधा।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, रस अवगाहत सुख संसाधा।।

(९)

हे राधे ! अब कृपावृष्टि हो।
हम भवसागर परम विपद में, अतिशय व्याकुल दयादृष्टि हो।।
कामादिक रिपु महा प्रबल है, तुरत शमन कर सुखद सृष्टि हो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, तब ही जीवन परम तुष्टि हो।।

(१०)

समय बीता जा रहा, रटो श्रीराधा नाम।
क्यों कर इत उत भटक रहे, भजो श्रीराधेश्याम।।
इसीमें जीवन-सार्थकता, जीवन यह शुभ काम।
भटकत-भटकत अटक गये, वञ्चित सुख-विश्राम।।
राधा-राधा रटो सतत ही, पावो सुख अविराम।
राधासर्वेश्वरशरणागत, कोटि चरण प्रणाम।।

(११)

चञ्चल मन तू क्यों भटकता, कर श्रीराधा ध्यान।
जहाँ परम सुख पावत अतिशय, इसीमें श्री भगवान।।
श्रीवृन्दावन मङ्गल-वीथिन, विहरो तजदो मान।
राधा-राधा निज मुख गावो, पावो शान्ति महान।।
कृपामयी श्रीप्रिया राधिका, कृपाधाम वृषभान।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, कर नित राधा गान।।

(१२)

जीवन राधा परम अधारा।

श्री श्रीजी श्रीपरमलाडिली, अति रसीली रसधारा।।

कुञ्जवासिनी श्रीवरसाना, अलवेली श्रीसरकारा।

रासविहारी राधामाधव, लीला सुभग सञ्चारा।।

श्रीवृन्दावन कुञ्ज कुञ्ज में, विहरत सखी निहारा।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, नित्य रास-रस विस्तारा।।

(१३)

राधा नाम विसारोगे, निश्चय जीवन हारोगे।

राधा नाम उचारोगे, नित्य सुधारस पावोगे।।

राधा परम कृपामयी, करुणाकर अतिदयामयी।

रसार्णव परमसुधामयी, नित रासरसलीलामयी।।

अशरणशरण श्रीयुगलचरण, सहज सदा भवभय हरण।

राधासर्वेश्वरशरण, सरल यह जीवनतरण।।

(१४)

श्रीराधे ! अब दरश दीजिये।

हम भवसागर डूबत पल में, कृपादृष्टि कर तार लीजिये।।

काम-मदादिक अतिशय ताडित, विकट कष्टमय अभय कीजिये।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, सुधावृष्टि कर तुरत सींचिये।।

(१५)

श्रीराधा निज हृदय बसावो।

युगल चरण की परम कृपा से, यह भवबाधा तुरत भगावो।।

ध्यान-गान में जय-जय राधा, प्रतिपल राधा हिय में ध्यावो।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीराधा रसना नित गावो।।

(१६)

राधा राधा राधा, श्याम संग राधा।
राधा राधा राधा, रास रंग राधा।।
राधा राधा राधा, वृन्दावन राधा।
राधा राधा राधा, श्याम घन राधा।।
राधा राधा राधा, सौरि-तट राधा।
राधा राधा राधा, वंशीवट राधा।।
राधा राधा राधा, कुंज वन राधा।
राधा राधा राधा, व्रज धन राधा।।
राधा राधा राधा, चरण कंज राधा।
राधा राधा राधा, 'शरण' भज राधा।।

(१७)

राधा भजो राधा भजो, राधा रस सार।
राधा सुनो राधा गुनो, राधा हिय धार।।
राधा कहो राधा चहो, राधा आधार।
राधा गहो राधा अहो, राधा सत्कार।।
राधा सुधा राधा बुधा, राधा सञ्चार।
राधा सदा राधा मुदा, राधा उच्चार।।

राधा वर्ण राधा स्वर्ण, राधा चिदागार।
राधा चर्ण राधा शर्ण, राधा जयकार।।

(१८)

भजो निरन्तर श्रीराधे, व्रजो व्रजान्तर श्रीराधे।
भजो निशान्तर श्रीराधे, तजो न अन्तर श्रीराधे।।
गावो अविरल श्रीराधे, ध्यावो प्रतिपल श्रीराधे।
पावो शुभफल श्रीराधे, भावो भवतल श्रीराधे।।
श्रीवन निशिदिन श्रीराधे, व्रजवन प्रतिदिन श्रीराधे।
सखिजन सह दिन श्रीराधे, भजमन अनुदिन श्रीराधे।।
दिव्य-चरण शुभ श्रीराधे, भव्य-वरण अभ श्रीराधे।
शरण शरण हम श्रीराधे, कृपावरण रत श्रीराधे।।

(१९)

श्रीवन विहरत कुञ्जकिशोरी।
मन्द-मन्द गति अवनि धरत पद, पङ्कज मंगल दरश भलोरी।।
श्रीवृन्दावन-मञ्जुल कुञ्जन, शोभित राधा केलि लसोरी।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, राधामाधव-शरण गहोरी।।

(२०)

श्रीवृन्दावन धरणी पावन।
जहाँ विराजत राधामाधव, सखिजन अविचल चित्त वसावन।।
युगललाल की शोभा लखि२, ललित अलीजन हिय सरसावन।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अनुपम प्रिय छवि परम मन भावन।।

(२१)

श्रीवृन्दावन शोभा सावन।
हरित द्रुमावलि कुञ्जन राजत, राधामाधव सखिमन्न भावन।।
पिक-मोर-सारिका खगरव गुञ्जित,
दादुर धुनिरत करत प्रधावन।
श्यामल मञ्जुल नभ घन शोभित, परषत पुनि२ श्रीवन पावन।।
चपला चमकत चारु चपल अति,
युगललाल सखि ललित झुलावन।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, यह शोभा लखि भाग मनावन।।

(२२)

भीजत कुञ्जन नवलकिशोरी।
नव-घन वरषत विहरत श्रीवन, कुञ्जसखीसह राधाप्यारी।।
श्रीराधा अलवेली मुद मन, संग सुशोभित श्रीवनवारी।
चञ्चल चपला दमकत गर्जत, श्याम घटा है अति सुखकारी।।
पावन यमुना नव जल धारा, बहत अति सुन्दर रस संचारी।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, मधुकर गुञ्जन शुभ बलिहारी।।

(२३)

कुंजमहल प्रिय फाग विहार।
युगललालश्री विलसत मंगल, फागुन शुभ दिन फाग-फुहार।।
श्रीराधा संग खेलत होरी, कुंजविहारी श्यामकुमार।
सखी सहेली ललित युगलवर, सेवा अभिरत जय उच्चार।।

विविध सुगन्धित सुमन गुच्छकर, वरषत हरषत युगल सुखसार।
भर पिचकारी राधाप्यारी, पुनि-पुनि छोड़त रसरंगधार।।
बिच२ अतिशय पुलकित होकर, सुभग उडावत अवीर वहार।
श्रीवृन्दावन नव कुंजवन, हो हो होरी हृदय अवधार।।
शुक-पिक-केकी जय-जय राधा, मंगल धुनि कर रस संचार।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय-जय पुनि जय रसत रसधार।।

(२४)

हो हो होरी व्रज-वसुधा पर।
श्रीवरसाना मंगल वीथिन, विलसत होरी राधा रसतर।।
निज सखियन संग लै पिचकारी, श्रीराधा रंग डारत प्रिय पर।
फागुन अवसर सुद नवमी दिन, श्रीवरसाना होरीं रंग भर।।
जय-जय राधे पुलकित उचरत, श्रीव्रजवनिता-गोप-विप्रवर।
लाल गुलाल उडत अति सुन्दर, पूरा नभ-थल-तरुवर मनहर।।
यह शोभा लखि अभिनर्तन रत,
विधि-शिव-मुनिवर-पुरन्दर-किन्नर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीव्रजमण्डल पावन शुभकर।।

(२५)

झूलत डोला आज युगलवर।
फागुन मंगल अति सुखदायक, श्रीवृन्दावन सुभग अवनि पर।।
राधामाधव परम मुदित मन, पुनि-पुनि झूलत दोला सुखकर।
कुंजसखीजन पुलकित अन्तर, श्यामाश्याम झुलावत बर-बर।।

यह नव-शोभा अतिशय मंगल, करत रसिकजन जय उच्चस्वर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, धन्य भाग सुख पावत सुन्दर।।

(२६)

झूलत राधा नित्य किशोरी!
कुञ्जमहल बिच सुभग सरोवर, तट अवझूलत लेत हिलोरी।।
लाल झुलावत निज कोमलकर, प्रिया सुशोभित पीत पिछोरी।
हरिप्रिया-ललितादिसखीजन, यह छवि दरशत परम विभोरी।
त्रिविध पवन प्रिय सेवा अभिरत, खगगन कूजत कुञ्जविचोरी।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, श्रीराधा दृग पलक मिचोरी।।

(२७)

वन-वन कूजत कोकिल-कीर।
श्रीवृन्दावन नववसुधा पर, नव घन गर्जत वर्षत नीर।।
प्रिया राधिका प्रभु सह भीजत, दर्शन उत्सुक सखिजन भीर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर ध्याननिरत नित रसिकवर-धीर।।

(२८)

राधा दरशत नाचत मोर।
बहुविध नर्तन दिव्य कलारत, श्रीवन कुञ्जन मञ्जुल भोर।।
कुञ्जसखीसह पुलकित राधा, अवलोकत है मोर-किशोर।
चारु चपल गति अतिशोभित है, प्रिया विलोकत भावविभोर।।
यह रस विलसत नवल युगलवर, जय२ करतीं सखीं कर-जोर।
शरण सदा राधासर्वेश्वर, अनुपम शोभा प्रियाचितचोर।।

*

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज द्वारा विरचित-

❊ ग्रन्थमाला ❊

१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर	(प्रकाशित श्लोक सं.)	
(युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२. श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३. उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३६५
६. श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८. हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९. भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३७
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५
१४. भारत कल्पतरु (पद सं० ६६, दोहा सं० १६०)	,,	
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६५
१६. विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६)	,,	
१७. नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०८
१९. श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६०
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी (पद सं.६४-दोहा सं.६२)	,,	
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्	,,	१०
(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २०)		

२४. छात्र-विवेक-दर्शन (हिन्दी दोहा-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० २४१)

२५. भारत-वीर-गौरव (हिन्दी-पद्यात्मक दोहा सं. १८१) ,,

२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० ३२)

२७. परशुराम-स्तवावली (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, १७
(दोहा सं० ४६, पद सं० ६)

२८. श्रीराधा-राधना (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, ५९
(पद सं० २८, दोहा सं० ५१)

२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १८

३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ३५

३१. श्रीराधामाधवरसविलास, महाकाव्य ,,
(दोहा सं० १०५३)

३२. गोशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १३५
(दोहा सं० ६३, पद सं० १४)

३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः ,, ८०
(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं. १०१, पद सं. १६)

३४. स्तवमल्लिका (संस्कृत पद्यात्मक) (दोहा सं० ४२) ,, २१३

३५. श्रीरामस्तवावली (संस्कृत -पद्यात्मक) ,, ५९
(दोहा सं० २१)

३६. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम् ,, १०३

३७. दिव्यचरितप्रभा ,,

३८. प्रेरणाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०३

३९. उद्गारशतकम् (संस्कृत गद्यात्मक) ,,

४०. श्रीपीताम्बरदशश्लोकी (संस्कृत-पद्या.) ,,

४१. श्रीयुगलस्तववल्ली (संस्कृत-पद्यात्मक) ,,

कुल हिन्दी पद सं० २७८२ कुल श्लोक सं० २२४४



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतुःसम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकशः श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाया को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वज्रयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते है। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषतः उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।